साहित्य के विविध विमर्श

उच्चतर शिक्षा निदेशालय, पंचकूला, हरियाणा से अनुमोदित एवं
गुरु नानक गर्ल्ज कॉलेज यमुनानगर हरियाणा द्वारा आयोजित
एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्र

संपादक

डॉ. गीतू खन्ना

संपादक मण्डल

डॉ. शक्ति, डॉ. अंजू, संदीप कौर
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता, डॉ. अमनदीप कौर

ISBN : 978-93-94628-38-0

© : लेखक

मूल्य : ₹ 500/-

प्रथम संस्करण : सन् 2024

प्रकाशक : विकास बुक कम्पनी
4378/4-बी, जेएमडी हाउस,
मुरारिलाल गली, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मोबाइल : 9643631687
email : vbcompany22@gmail.com

आवरण : के. एस. ग्राफिक्स

शब्द-संयोजन : सानिया कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : विशाल कौशिक ऑफसेट प्रेस,
दिल्ली-110093

Sahitya Ke Vividh Vimarsh *Edited by* Dr. Geetu Khanna
Editorial Board : Dr. Shakti, Dr. Anju, Sandeep Kaur, Dr. Laxmi Gupta, Dr. Amandeep Kaur

अनुक्रम

शुभ सन्देश *6*

शुभ सन्देश *7*

शुभ सन्देश *8*

शुभ सन्देश *9*

संपादकीय *11*

1. समकालीन महिला कथा सहित्य में नारी विमर्श 17
   डॉ. नीना मेहता
2. हिंदी उपन्यासों में वेश्यावृत्ति विमर्श 28
   डॉ. नरेश कुमार सिहाग
3. प्रवासियों का प्रवास एक नज़र 37
   डॉ. रेखा.जी
4. साहित्य में नारी विमर्श 41
   डॉ. आर.एन. शीला
5. साहित्य में नारी विमर्श 47
   डॉ. जी शकीला
6. साहित्य में सूफ़ी काव्य विमर्श : वारसी सम्प्रदाय के आलोक में.... 51
   डॉ. दरख्शाँ बानो
7. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श 58
   दिव्या रानी
8. संस्कृत साहित्य में पर्यावरण विमर्श..... 64
   डॉ. पुष्पा शर्मा
9. साहित्य में आदिवासी विमर्श : झारखंड के संदर्भ में..... 75
   तरुण कांति खलखो
10. हिंदी साहित्य में नारी विमर्श..... 81
    मिथिला पी नायर

11. साहित्य और राजनीति 88
नितिन सुभाषराव कुंभकर्ण
12. Role of communication shaping the Indian literature 93
Dr Gunjan Sharma
13. साहित्य और बाल विमर्श 98
डॉ वन्दना गुप्ता
14. साहित्य में स्त्री विमर्श 104
साईमीरा जोशी
15. साहित्य में बाल विमर्श 108
अमित कुमार
16. डॉ॰ शांतिस्वरूप कुसुम के काव्य में पौराणिक कथाओं में नारी और समाज 113
रवि कुमार
17. Yog in Indian Literature 118
Dr Meenakshi Gupta
18. साहित्य में सांस्कृतिक पक्ष 123
डॉ. गीतू खन्ना
19. हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श 130
डॉ. शक्ति बुद्धिराजा
20. हिन्दी साहित्य और बाल विमर्श 136
डॉ. अंजु बाला
21. हिन्दी साहित्य पर राजनीति का प्रभाव 145
संदीप कौर
22. ग्रामीण संदर्भ एवं स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास 152
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता
23. हिन्दी साहित्य में बाजारवाद 160
डॉ. अमनदीप कौर
24. हिंदी साहित्य में बाल कथा विमर्श 166
मिस दीपमाला
25. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का वर्तमान स्वरूप और इसका महत्त्व 173
मोनिका चोपड़ा
26. वर्तमान युग में बोध एवं आचरण में सामंजस्य जैन-आदिपुराण के संदर्भ में 177

हिन्दी साहित्य और बाल विमर्श

डॉ. अंजु बाला
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज यमुनानगर।

शोध सारांश

बाल साहित्य से तात्पर्य बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य और बाल विमर्श से अभिप्राय बच्चों के लिए लिखित साहित्य के चिंतन, दशा और संभावनाओं पर आधारित विमर्श है। आज के बच्चे कल का भविष्य हैं और जो कुछ भी उनके लिए लिखा जाये वह साहित्य उनकी बौद्धिक उन्नति में सहायक हो। आज के तकनीकी विकास के युग में बाल साहित्य का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। हर युग में बाल साहित्य लिखा जाता रहा है। विभिन्न कवियों, लेखकों और उपन्यासकारों ने बाल मानसिकता का अध्ययन करके अपनी लेखनी चलायी है। आज का बालक शैक्षिक परिवेश, अपना संसार, अपनी आकांक्षाएँ और अपनी अस्मिता साहित्य में पाना चाहता है। कुल मिलाकर आज के बालक की रुचि आधुनिकता बोध में है। समकालीन बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान, विज्ञान की प्रगति, समकालीन बदलते जीवन मूल्य और संचार माध्यमों में आई क्रांति आदि ही प्रमुख विषय वस्तु है।

बीज शब्द : तकनीकी, परिस्थितियों, मनोविज्ञान , मानसिकता, अस्मिता।

प्रस्तावना

बचपन व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे अहम् भूमिका निभाता है। उस समय बच्चे जो देखते हैं, सुनते हैं, उसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में बाल साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। एक साल से पन्द्रह साल तक का समय एक व्यक्ति की ज़िन्दगी में अत्यधिक अहम हैं। इस आयु में बच्चों में ज्ञान या नयी चीज़ें ग्रहण करने की इच्छा शक्ति तीव्र होती है। 18 की आयु में उनमें कुछ नये कर

दिखाने की ललक होती है। लेकिन भारत की शिक्षा प्रणाली में 25-30 सालों तक पुस्तकों में व्यक्ति को उलझाकर रख देते हैं। भारत में बाल साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन मात्र माना गया है। इसलिए बाल साहित्य को उतना महत्त्व नहीं मिल पाया, जितना उसे मिलना चाहिए। आज की व्यस्त ज़िन्दगी में माँ- बाप के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं होता है कि वे उन्हें सही मार्गदर्शन दे सके। तकनीकी के विकास ने भी बच्चों को बाल साहित्य से दूर कर दिया है। आज कल बच्चे हिंसात्मक फिल्में, मोबाईल गेम आदि में व्यस्त रहते हैं जो उन पर हिंसात्मक प्रभाव छोड़ती है। बच्चों में बालसाहित्य द्वारा संसार के बारे में अनेक अवधारणाएँ कहानी, कविता या कोई चित्रात्मक किताब से बनती और बिगड़ती है। बाल साहित्य बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखा जाता है। बालकों की मानसिक क्रियाओं का वर्णन करता है तथा उनको वैज्ञानिक ढंग से समझने की चेष्टा करता है।

बाल विमर्श से अभिप्राय बच्चों के लिए लिखित साहित्य के चिंतन, दशा और संभावनाओं पर आधारित विमर्श है। सामान्यतः साहित्य के क्षेत्र में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि विमर्शों से तात्पर्य वर्ग विशेष द्वारा उसी वर्ग विशेष से संबंधित चिंतन से है। जैसे स्त्री विमर्श का अर्थ है– स्त्री साहित्यकार द्वारा स्त्री जीवन से संबंधित विमर्श, दलित विमर्श अर्थात दलित वर्ग के साहित्यकारों द्वारा दलित वर्ग के जीवन से संबंधित चिंतन आदि। इस संदर्भ में दलित साहित्य के प्रमुख साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथन विचारणीय है दलित द्वारा दलित के जीवन पर लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है। इसके अतिरिक्त स्वानुभूति पर आधारित साहित्य को ही उस वर्ग विशेष का साहित्य माना जाने लगा है। वस्तुतः समकालीन हिंदी साहित्य में विमर्शों के साहित्य की एक नवीन परंपरा का चलन देखा जा रहा है। इसी तर्ज पर साहित्य में बच्चों पर किए जाने वाले विचार विमर्श को बाल विमर्श के अंतर्गत रखा जा रहा है। साथ ही इस तथ्य पर भी ज़ोर दिया जा रहा है कि किस प्रकार की रचनाओं को बाल साहित्य की श्रेणी में रखा जाए। बाल विमर्श के अंतर्गत बाल साहित्य को कई श्रेणियों में बांटकर विमर्श का विषय बनाया गया है। जैसे - 1. प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा लिखा गया बाल साहित्य, 2. स्वयं बालकों द्वारा लिखा गया साहित्य, जिसमें बच्चे ही केंद्र में हो, 3. अन्य विषयों को केंद्र में रखकर बच्चों द्वारा लिखित रचनाएं। कई विचारकों का मानना है कि बच्चों द्वारा स्वानुभूति के आधार पर लिखित रचनाएं हीं बाल विमर्श के अंतर्गत आती हैं। बालक के द्वारा रचित रचना बड़ों के लिए भी हो सकती है, और प्राय होती है।

विषय विस्तार
साहित्यावलोकन

पूर्व प्रेमचंद युगीन कथा साहित्य में बाल विमर्श

संस्कृत साहित्य में बालोपयोगी और किशोरोपयोगी रचनाएँ थीं जिनमें कथासरित्सागर, पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाएँ, ईसप की कहानियाँ, सिंहासन बत्तीसी, बेताल पचीसी (अनूदित) आदि थी। उन्नीसवीं सदी तक यूरोप का प्रभामंडल भी व्यापक हो गया था। राबिन्सन क्रूसो, डेविड कॉपरफील्ड, सिंदबाद आदि पुस्तकों की किशोरोपयोगी कहानियों से भारतीय बच्चे परिचित हो चुके थे। हमारे यहाँ भी इसका असर पड़ रहा था और इस तरह के साहित्य का सृजन होने लगा था। संस्कृत और अंग्रेज़ी पुस्तकों के जोर-शोर से अनुवाद हुए। हिंदी खड़ी बोली तब अपने विकास की ओर अग्रसर ही थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र 'अंधेर नगरी चौपट राजा' जैसे नाटकों की रचना कर रहे थे, जो शिक्षाप्रद तो थी ही, सामाजिक चेतना को उजागर करने वाली रचनाएँ भी थीं। हिंदी में बाल कहानियों का लेखन भारतेंदु युग से ही प्रारंभ हो चुका था। 'राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद' को बाल कहानी के सूत्रपात का श्रेय दिया जाता है। उनकी कहानी राजा भोज का सपना, बच्चों का इनाम, लड़कों की कहानी आदि रचनाएं इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इससे पूर्व 1623 ई. ईश्वर में जटमल द्वारा लिखित गोरा बादल की कथा को प्रथम बाल पुस्तक माना गया। किंतु यह रचनाएं बच्चों को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गई थी। सन 1862 में 'बाल दर्पण 'नाम से बच्चों की पहली पत्रिका प्रकाशित हुई। इस पत्रिका के माध्यम से देश प्रेम और अच्छे संस्कारों के उद्देश्य से उपनिषदों और धर्म ग्रंथों की कहानियों का प्रकाशन भी किया गया।

द्विवेदी युग में अनेक धार्मिक ग्रंथों के बाल संस्करण जैसे बाल भागवत, बाल रामायण, बाल महाभारत आदि प्रकाशित हुए। सन् 1917 में महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इंडियन प्रेस इलाहाबाद द्वारा बाल सखा पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिसके प्रथम संपादक पंडित बद्रीनाथ भट्ट थे। द्विवेदी युगीन अन्य बाल पत्रिकाओं में विद्यार्थी एवं शिशु का नाम उल्लेखनीय है। इन पत्रिकाओं में शेख चिल्ली, ठगों और परियों की कहानी, शिक्षाप्रद, पौराणिक और धार्मिक कथाओं को प्रमुख रूप से बाल कहानी का विषय बनाया गया। द्विवेदी युग के बाल साहित्य रचने वालों में बालमुकुंद गुप्त, पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय, पंडित कामता प्रसाद गुरु, मैथिलीशरण गुप्त, रामजी लाल शर्मा, मन्नन द्विवेदी, पंडित सुदर्शन आचार्य, शालिग्राम शर्मा, डॉ रामकुमार वर्मा, रघुनंदन प्रसाद त्रिपाठी, शंभू दयाल सक्सेना, ठाकुर श्रीनाथ सेन आदि

का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

द्विवेदी युग के बाद लिखे जाने वाले बाल साहित्य में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख रहा। इस युग की कहानियों में वैज्ञानिकता, रोचकता, वीरता और मनोरंजकता आदि का समावेश था।

प्रेमचंदयुगीन कथा साहित्य में बाल विमर्श

प्रेमचंद युग को कथा साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। बाल कहानियां भी यथार्थ अभिव्यक्ति के साथ सर्वप्रथम प्रेमचंद युग में ही प्रकाशित हुई। जैसे- दो बैलों की कथा, ईदगाह आदि। प्रसिद्ध आलोचक परमानंद श्रीवास्तव का मत है कि प्रेमचंद बड़ी संवेदना के लेखक है, उनके यहाँ सबके लिए साहित्य मिल जाता है बच्चों के लिए साहित्य मिल जाएगा, किशोरों के लिए भी मिल जाएगा। 'गुल्ली डंडा' किशोर भी मजा लेकर पढ़ेगा, बड़े लोग भी पढ़ सकते हैं। प्रेमचंद के कथा साहित्य की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि उनमें बालकों और किशोरों के मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। जैसे गबन नामक उपन्यास यद्यपि बालकों के लिये लिखित उपन्यास नहीं है, तथापि मुख्य पात्र जालपा के बाल मन का अत्यंत यथार्थ चित्रण करते हुए प्रेमचंद जी ने आरंभ में ही लिखा है– एक बड़ी-बड़ी आंखों वाली बालिका ने वह चीज पसंद की जो उन चमकती हुई चीजों में सबसे सुन्दर थी। वह फिरोजी रंग का एक चंद्रहार था। मां से बोली अम्मा मैं यह हार लूंगी। माता ने कहा यह तो बड़ा महंगा है। चार दिन में इसकी चमक-दमक जाती रहेगी। बिसाती ने मार्मिक भाव से सिर हिलाकर कहा 'बहू जी 4 दिन में तो बिटिया को असली चंद्रहार मिल जाएगा। माता के हृदय पर इन सहृदयता से भरे हुए शब्दों ने चोट की। हार ले लिया गया। बालिका के आनंद की सीमा न थी। शायद हीरों के हार से भी उसे इतना आनंद ना होता। उसे पहनकर वह सारे गांव में नाचती थी। उसके पास जो बाल संपत्ति थी उसमें सबसे मूल्यवान सबसे प्रिय यही बिल्लौर का हार था।

प्रेमचंद जी की कहानियों में उपस्थित बाल पात्रों के चरित्र में बालकों के लिए उपदेश या शिक्षा से अधिक बाल मनोविज्ञान का चित्रण मिलता है। जैसे बड़े भाई साहब, ईदगाह, सिद्धू। बूढ़ी काकी आदि कहानियों में उपस्थित बच्चों के चरित्र चित्रण में बाल मन की सहृदयता, कोमलता और सच्चाई का यथार्थ अंकन है। मिद्धू नामक कहानी का बाल पात्र गोपाल मिद्धू नामक बंदर से बहुत प्रेम करता था। इस कथा में जानवरों से बच्चों की प्रेम और मित्रता की भावना का सुन्दर चित्रण मिलता है। लखनऊ शहर में एक सर्कस कंपनी आई थी। उसके पास शेर भालू, चीता और कई तरह के और जानवर भी थे। इनके साथ ही एक बंदर मिद्धू भी था। बच्चों के

झुंड के झुंड रोज इन जानवरों को देखने आया करते थे। मिद्धू ही उन्हें सबसे प्यारा लगता। उन्हीं बच्चों में गोपाल भी था। यह रोज आता और मिद्धू के पास घंटों चुपचाप बैठा रहता। वह मिद्धू के लिए घर से चने, मटर, कले लाता और उसे खिलाता। मिद्धू भी गोपाल से इतना हिल मिल गया था कि बिना उसके खिलाए कुछ ना खाता। इस प्रकार दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई।

इसी प्रकार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की कक्षा 9 की हिंदी की पाठयपुस्तक में संकलित दो बैलों की कथा में अत्यंत रोचक भाषा में बैलों का परिचय दृष्टव्य है लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है और यह है बैल। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते जुलते अर्थ में बछिया के ताऊ का भी प्रयोग करते हैं।

प्रेमचंद की अनेक कहानियों में जानवरों की उपस्थिति बाल मन को आकर्षित करती है। जैसे दो बैलों की कथा, मिद्धू, पूस की रात, आदि। इसीलिए बच्चों के पाठ्यक्रम में प्रेमचंद की कहानियां विशेष महत्व रखती है। उनका कथा संसार वस्तुतः मानव समाज के यथार्थ से जुड़ा है। अत बच्चों से लेकर बड़ों तक हर वर्ग के लिए उपयुक्त कहानियां और उपन्यास उनके कथा साहित्य में मिल जाता है। मंत्र, पंच -परमेश्वर, गुल्ली डंडा, क्रिकेट मेच, सैलानी बंदर, नमक का दरोगा जैसी कहानियां रोचक, मनोरंजक, हृदयस्पर्शी, मार्मिक और प्रेरणास्पद होने के कारण बच्चों के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित है। भाषा की सरलता, रोचकता और प्रेरणात्मक होने के कारण ही इन्हें बाल साहित्य के अंतर्गत रखा गया है। इस युग के अन्य कहानीकारों में पंत, महादेवी वर्मा (उदाहरण-गिल्लू), सुभद्रा कुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी आदि का नाम उल्लेखनीय है।

प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में बाल विमर्श

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाल साहित्य की समृद्धि हुई। सभी सरकारी गैर सरकारी संस्थाओं ने अनेक बाल पुस्तकें प्रकाशित की। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से बाल भारती नामक बच्चों की संपूर्ण पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। पराग, नंदन आदि इस युग की अन्य प्रमुख पत्रिकाएं है। इसी समय इंडियन प्रेस प्रयाग से कथासरित्सागर का बालोपयोगी संस्करण तथा ईसप की कहानियां छपी। तेनालीराम और बीरबल के मनोरंजक किस्से भी छापे गए। जादू की डिबिया, जादू की चिड़िया शीर्षक मजेदार कहानियां प्रकाशित हुई। बाल उपन्यास की विधा का आरंभ भी इसी युग में हुआ। लोक कथाओं के प्रति भी अभिरुचि बढ़ी। सन् 1960 से 1980 के बीच हिंदी बाल साहित्य का चतुर्दिक विकास हुआ। वैज्ञानिकता की

प्रवृत्ति बढ़ी। सचित्र पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। परी कथाएं भी नए रूप में रची गई, जैसे शारदा मित्र की नील परी और मसहरी की देवी, हरिकृष्ण देवसरे की नए परीलोक में तथा शिवमूर्ति सिंह वत्स की सुनहरी मछली आदि। इस कालखंड में विष्णु प्रभाकर, यादवेंद्र चंद्र शर्मा, श्री प्रसाद, डॉ. राष्ट्रबंधु, रामधारी सिंह दिनकर, चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक', रामबचन सिंह आनंद, विनोद चंद्र पांडेय, मनहर चौहान, जयप्रकाश भारती, योगेंद्र कुमार लल्ला, रत्न प्रकाश शील, हरेकृष्ण देवसरे, श्री चक्रधर नलिन, दिविक रमेश, देवेंद्र कुमार, शांति मेहरोत्रा, विभा देवसरे, स्नेहा अग्रवाल, शकुंतला वर्मा, क्षमा शर्मा, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, उषा यादव आदि रचनाकारों ने श्रेष्ठ बाल कहानियों की रचना की है।

समकालीन कथा साहित्य में बाल विमर्श

अंत में कहना चाहूंगी कि भले ही आज सृजन बल्कि उत्कृष्ट सृजन की दृष्टि से समकालीन हिंदी बाल साहित्य की स्थिति बहुत अच्छी और संतोषजनक हो चुकी है। ठीक है कि आज भी पारंपरिक सोच और पारंपरिक ढंग का बाल साहित्य लिखा और छापा जा रहा है, लेकिन ऐसे बाल साहित्य की भी कमी नहीं है जिसमें समसामयिक घटनाओं, परिवेश और भविष्य की दुनिया मौजूद है। जिसमें आज के बच्चे की नब्ज़ और धड़कन है। स्कूली शिक्षा-पद्धति और बस्ते के बोझ की विडंबना को लेकर सुरेंद्र विक्रम की एक बहुत अच्छी-मार्मिक कविता है। आज नई पीढ़ी में भी समर्पित और सशक्त रचनाकारों की अच्छी-खासी संख्या है, लेकिन, मेरे विनम्र मत में, इसके समक्ष आज वास्तविक चुनौती इसकी सही जगह और आकलन को लेकर बनी है। समकालीन कथा साहित्य में बाल कहानियों को एक विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया जा रहा है। इसके अनुसार बाल साहित्य छोटी उम्र के बच्चों को ध्यान में रख कर लिखा गया साहित्य होता है। बाल कथा साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन कर उन्हें जीवन की वास्तविकता से परिचित कराना है। अतः बाल साहित्य के लेखक को बाल मनोविज्ञान की पूरी जानकारी होना आवश्यक है तभी वह बाल मानस के अनुसार साहित्य रच सकेगा।

समकालीन बाल साहित्य के उत्थान में श्री के शंकर पिल्लई का नाम उल्लेखनीय है। श्री के. शंकर पिल्लई द्वारा बाल साहित्य के संदर्भ में चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट की स्थापना सन् 1957 में की गई थी इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिए बेहतर बाल साहित्य उपलब्ध कराना है। बाल कथा साहित्य की अभिवृद्धि में भी इस ट्रस्ट का उल्लेखनीय योगदान है। जैसे- हिंदी में पौराणिक कथाएं- यथा- कृष्ण सुदामा, प्रहलाद आदि। पशु पक्षियों, पर्यावरण और वन्य जीवन पर आधारित

कहानियों जैसे पंचतंत्र की कहानियां, जंगल की कहानियां आदि। विज्ञान की ज्ञानवर्धक कहानियां जैसे उपयोगी अविष्कार, - कंप्यूटर, घड़ी, टेलीफोन, रेलगाडी, पर्वत की पुकार, आदि। मनोरंजक, खेल, जासूसी, रहस्य, और रोमांच की कहानियां जैसे अनोखा उपहार, ननिहाल में गुजरे पांच दिन, जासूसों का जासूस, पांच जासूस आदि। महान व्यक्तित्व से संबंधित कहानियां जैसे- जगदीश चंद्र बसु, सुभाष चंद्र बोस आदि।

वर्तमान समय में हिंदी बाल साहित्य में अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं से अनूदित बाल साहित्य का योगदान भी उल्लेखनीय है। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कोरियाई बाल कविता नामक पुस्तक दिविक रमेश द्वारा अनूदित की गई है। इसी क्रम में सन् 1991 में शंकर आर्ट अकादमी की स्थापना की गई जहां पर पुस्तक चित्र आर्ट तथा ग्राफिक के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। पत्रिकाओं के स्तर पर अनेक भारतीय भाषाओं में चंपक, बालहरा, बालभारती, नन्हे सम्राट, नंदन आदि का प्रकाशन किया जा रहा है! समाचार पत्रों में भी बालकों का कोना प्रकाशित किया जाता है। टाइम्स ऑफ इंडिया के दरियागंज स्थित एम आई सेंटर में दिल्ली के स्कूली बच्चों की रचनाओं पर आधारित शिक्षा का पृष्ठ संपादित होता है।

आधुनिक बाल कथा साहित्य का प्रवर्तक श्री जयप्रकाश भारती को माना गया है। जयप्रकाश भारती जी का मानना है कि जिस देश के पास समृद्ध बाल साहित्य नहीं है, वह उज्ज्वल भविष्य की आशा कैसे कर सकता है? और क्या बालक को कल या परसों के भरोसे छोड़ा जा सकता है? 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए हमारे बालक तैयार है कि नहीं। बाल विमर्श से संबंधित तथ्यों और इसके स्वरूप की महत्वपूर्ण जानकारियां श्री जयप्रकाश भारती की बाल साहित्य 21वीं सदी में प्रकाशित मनु की हिंदी बाल कविता का इतिहास एवं दिविक रमेश के साक्षात्कार और हिन्दी कहानी का समकालीन परिवेश, प्रेमचंद की बाल कहानियाँ कुछ निजी नोट्स में भी संदर्भित है।

वर्तमान बाल साहित्य की विषयवस्तु के संदर्भ में डॉ. कामना सिंह ने अपनी पुस्तक स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य में लिखा है स्वतंत्रता के बाद उपजी आधुनिकता की लहर ने आज के बच्चे की मानसिकता के साथ ही उसके समूचे साहित्यिक परिदृश्य में भी नव्यता का बीजारोपण किया है। जन समूह संचार माध्यमों में आई क्रांति के फलस्वरूप कंप्यूटर, इंटरनेट, आदि आज के बच्चे के लिए जादुई दुनिया नहीं दैनिक प्रयोग की चीजें बन चुकी है। इसी परिप्रेक्ष्य में वह साहित्य में भी कुछ नया चाहता है। कुछ ऐसा जो उसे ना तो उपदेश की तरह ऊपर से थोपा प्रतीत हो और ना ऐसा जो उसे एक अजनबी दुनिया में ले जाए। वह अपना शैक्षिक

परिवेश, अपना संसार, अपनी आकांक्षाएँ और अपनी अस्मिता साहित्य में पाना चाहता है। कुल मिलाकर आज के बालक की रुचि आधुनिकता बोध में है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि समकालीन बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान, विज्ञान की प्रगति, समकालीन बदलते जीवन मूल्य और संचार माध्यमों में आई क्रांति आदि ही प्रमुख विषय वस्तु है। किंतु पूर्व के कथा साहित्य में अभिव्यक्त लोक कथाएं, परी कथाएं, पौराणिक कथाएं, ऐतिहासिक कथाएं, दादी नानी के किस्से, रहस्य लोक की कथाएं, जासूसी कहानियां, उपदेशात्मक और प्रेरणास्पद किंतु अत्यंत रोचक और मनोरंजन से युक्त कल्पना प्रधान से लेकर यथार्थ तक की अभिव्यक्ति करने वाले कथा साहित्य का आज भी उतना ही महत्व है। इनके माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता, रागात्मकता और संवेदनशीलता के मानवीय गुणों का संचार होता है। यांत्रिकता के वर्तमान दौर में इन मानवीय गुणों का महत्व और भी बढ़ जाता है। नीरस उपदेशों और ज्ञान के बोझ से भरी हुई कहानियां कभी भी बाल साहित्य का अंग नहीं बन सकतीं। अतः हिन्दी कथा साहित्य में बाल विमर्श के संदर्भों के अध्ययन के लिए बालकों के शिक्षण या मनोरंजन के उद्देश्य से लिखी गयी कहानियों के साथ-साथ ऐसी कहानियों को भी देखना होगा जो भले ही बाल पाठकों के लिये सोद्देश्य न लिखी गयी हो, किन्तु उनकी विषय वस्तु बच्चों के मानसिक विकास के लिये उपयुक्त, मनोरंजक, प्रेरणादायी और शिक्षाप्रद हों। दूसरी ओर बाल विमर्श के अंतर्गत हम उन कृतियों का भी अध्ययन करते हैं जो बालकों के पढ़ने के लिए उपयुक्त या उनके योग्य नहीं है किन्तु उनमें बच्चों के मानसिक और सामाजिक उत्थान-पतन की समस्याओं पर विचार किया गया हो। जैसे- मन्नू भण्डारी का उपन्यास आपका बण्टी, प्रेमचंद जी के उपन्यास गबन और निर्मला, मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बोझ' आदि।

इन कथा साहित्यों में बच्चों की परवरिश और उनके प्रति माता पिता और समाज के दायित्वों पर विमर्श किया गया है। इन कृतियों में चित्रित बच्चे उपेक्षा का शिकार हैं। आपका बण्टी का केन्द्रीय बाल-पात्र बण्टी माता पिता के तलाक के कारण उपेक्षित है तो बोझ कहानी का बालक कामकाजी माता पिता की अर्थोपार्जन की व्यस्तता के कारण उपेक्षित है। निर्मला उपन्यास में तोताराम के तीनों पुत्र अकुशल परवरिश के कारण छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और गबन की बालिका जालपा अनुचित संस्कार के कारण विवाह का अर्थ केवल गहने, कपड़े, और धन सम्पन्न जीवन ही समझ पाती है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य में बाल विमर्श के अनेक आयाम

है जो समय और समाज के परिप्रेक्ष्य में बाल मन को समझने और उनकी परवरिश, विकास, आकांक्षाओं और अधिकारों के प्रति हमें सचेत करते हैं।

वस्तुतः आज भी लगता है कि हिंदी में लिखा जा रहा बाल-साहित्य जो ऊंचाई छू चुका है, न तो उसकी ठीक से पहचान ही हो पा रही है और न ही उसे कायदे से उसकी उपयुक्त जगह ही मिल पा रही है। इसका प्रमुख कारण, मेरी निगाह में, इसे बड़ों के लिए लिखे जा रहे सृजन के समक्ष न समझा जाना ही है। कोई भी सृजन, अगर वह सृजन है तो किसी भी सृजन के समक्ष माना जाना चाहिए और उसे साहित्य के इतिहास में ससम्मान स्थान दिया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय स्तर पर बाल साहित्य का महत्व तो निर्विवाद है। बच्चों के लिए लिखना बड़ी चुनौती की बात है। लेकिन बच्चों को सही दिशा दिखाये बिना समाज को बदलना भी संभव नहीं है। बड़ों के लिए लिखने से समाज बदला नहीं जाएगा। लेकिन छोटे बच्चों को सही शिक्षा व आदर्श प्रदान करने में सक्षम हुए तो एक नये भविष्य का निर्माण किया जा सकता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समाज व व्यक्ति के निर्माण में बाल साहित्य की अहम भूमिका है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भंडारी मन्नू, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन
2. दिल्ली पृष्ठ 4. संस्करण- 2000। मुंशी प्रेमचंद, गबन, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, पृष्ठ 31
3. दिविक रमेश साक्षात्कार साहित्य आज तक' चैनल https://youtu&be/Pv6S-1W-NOM) 18/11/2018। दिनांक
4. प्रपन्न कौशलेन्द्र, बाल साहित्यः बच्चों में पढ़ने की gadyakosh.or
5. https://www.hindisamay.com/content/10506/1 प्रेमचंद की बाल कहानियाँ कुछ निजी नोट्स दिविक रमेश।
6. मुंशी प्रेमबंद, दो बैलों की आत्मकथा NCERT, क्षितिज-भाग-1, कक्षा 09 के हिन्दी के पाठ्यक्रम में संकलित कहानियां।
7. मुंशी प्रेमचंद, मिद्धु, कृति प्रकाशन प्रा. लि. लखनऊ मेधा 5 में संकलित कहानियां।
8. सिंह, सुधाकर एवं रानी, वर्षा, कथा कहानी, जयभारती प्रकाशन, प्रयागराज संस्करण 2016, ISBN - 978-93-84919-05-041